साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

शोधालेख

पीटर पॉल एक्का का उपन्यास 'पलास के फूल' : आदिवासी समाज में विस्थापन का दस्तावेज

पूजा पॉल
पी हिन्दी विभाग ,एच डी शोधार्थी.
राजीव गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

शोध- सार-

हिन्दी आदिवासी साहित्य में का नाम बहुत ही चर्चित माना जाता है 'एक्का पीटर पॉल'।मूल ' यानी देश के 'आदिवासी' को कहा जाता है 'निवासी। दरअसल आदिवासी समाज को के खांचे में रखा जाता है 'हाशिए का समाज'। आजादी के बाद आदिवासियों की अवस्था ओर अधिक दयनीय होने लगी । विकास की लहर ने आदिवासियों के जमीन को ही बहाकर ले गया । जमीन सरकार के कब्जे में आते ही आदिवासियों के जीवन में नामक समस्य 'विस्थापन'ा ने आ घेरा । इसी ज्वलंत समस्या को मद्देनजर रखते हुए आदिवासी उपन्यासकार पीटर पॉल एक्का ने बहुत ही प्रभावी ढंग से अपनी लेखनी चलाई है । उपन्यासों के माध्यम से उपन्यासकार ने सरकारी योजनाओं के सफलता के पीछे की सच्चाईआदिवासियों के साथ हो रहे अन्याय और समाज , मेंा फैले भ्रष्टाचार के मुखोटे का पर्दाफाश करने में सफल हुए है । पीटर पॉल एक्का के कुल चार उपन्यास है । उनके द्वारा रचित चारों उपन्यास आदिवासी जीवन पर केन्द्रित है । उनमें से उपन्यास बहुत महत्वपूर्ण और यथार्थ जीवन से 'पलास के फुल' सम्बंधित है। इस उपन्यास में की त्रासदी को झेलते आदिवासियों का संघर्षमय जीवन चित्रित किया है 'विस्थापन'।

बीज शब्द आदिवासी,देश ,पीटर पॉल एक्का ,विस्थापन ,उपन्यास समस्या इत्यादि ,।

मूल आलेख –

हमारे देश में आर्योंका आगमन होते ही उन लोगों ने आदिवासियों को उपेक्षितप्रताड़ित और अधिकारों से वंचित , करने लगे। धीरे धीरे आर्यों ने अपना वर्चस्व फैलाने के लिए आदिवासियों को हाशिए का समाज का दर्जा देने लगे-। कालक्रम - थलग नजरियों से देखने लगे-आदिवासी समाज को अलग अनुसार बाहर से आये लोगों ने। गुलामी का जंजीर तोड़ भारत देश को आजाद कराने में आदिवासियों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है । स्वाधीन होने के बाद देश का शासनतंत्र हमारे नेताओं के हाथ में आया तो मूल निवासियों को आश्वासन दिया गया कि उन्हें भी अपना अधिकार जरुर मिलेगा । राजनीतिक सत्ता में खड़े नेताओं का मूल लक्ष्य यहीं था कि सबसे पहले हाशिए के समाज को विकास एवं उन्नतिशील बनाया जाए । उस समय देशबाजारीकरण और उदारीकरण का दौर चल ,मंडलीकरण-भू ,औद्योगिकीकरण ,विदेश के चारों तरफ आधुनीकीकरण- रहा था। हमारा नया स्वाधीन देश ने भी समय के बहाव के साथ चलने में ही उचित समझा । हमारे देश को विकासशील और उन्नतशील बनाने के लिए आदिवासियों की जमीन का इस्तमाल होना शुरू किया गया । आदिवासियों ने देश की भलाई के लिए अपना सर्वस्व लुटाने लगे लेकिन बदले में राजनीतिक सत्ताधारियों ने आदिवासियों को अपना हक नहीं दिया ,। जिस कारण

साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

आदिवासियों को विस्थापन का दर्द झेलना पर रहा है। इसी सन्दर्भ में डॉआजाद भारत " संजय कुमार लक्की का कहना है कि . के साठ साल कई उम्मीदों के टूटने और कई प्रतीक्षाओं के निष्फल होने के साल हैं। इन्हीं वर्षों में सत्ता और शक्ति के केन्द्रों से जुड़ा एक छोटा सा समूह इस बड़ी आबादी की सारी ज –रूरतों को रौंदते हुए और उसे हर स्तर पर विस्थापित करते हुए , "भरा मरुद्यान बनाने के छल में सफल हुआ है-अपने लिए एक हरा1 हमारा देश जितना ही विकास के सीढ़ी में चढ़ता जा रहा , की समस्या बढ़ने लगी है 'विस्थापन' आदिवासी समाज में। विस्थापन की समस्या ने आदिवासियों के जीवन को और भी अधिक कठीन और संघर्षमय बना दिया है।

पीटर पॉल एक्का द्वारा रचित उपन्यास में आदिवासियों के आन्तरिक 'पलास के फुल'और बाह्य जीवन को प्रतिफलित किया गया है। यह उपन्यास विस्थापन समस्या पर केन्द्रित है। उपन्यासकार ने आदिवासियों के जीवन में विस्थापन नामक समस्या के सभी पहलुओं को रेखांकित किया है। विस्थापन का दंश झेलते आदिवासियों की दुःख और त्रासदीपूर्ण जीवन का पीड़ादायक वर्णन किया गया ।तमाम विकास परियोजनाओं से आदिवासियों को भूख और" का कहना है कि 'सहाय मीणा गंगा' विस्थापन के अलावा कुछ नहीं मिला" 2 इसी कटु सत्य का परिपुष्टि करती है पीटर पॉल एक्का की उपन्यास 'पलास के फुल'। आदिवासी विस्थापित होते ही रोजगार की समस्या उभर कर आती हैं। भूख की आग में आदिवासियों का जीवन सुलझ जाता है। गाँव भर में उथलपुल बनाने की परियोज-पुथल तभी शुरू हो गयी जब सरकार ने सड़क-ना लागू की। आदिवासियों का जीवन प्रणाली में बहुत अधिक बदलाव की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है-। परियोजनाओं का काम शुरू होते ही प्राकृतिक संपदाएं क्षतिग्रस्त होती है। सड़क बनाने के लिए बहुत अधिक पेड़ काटना परता है। सरकार अब मालिक बनकर जंगलों के जंगल काट डालते है। जंगल का असली संरक्षक आदिवासियों का वनस्पति पर रहे अधिकार को सरकार छीन लेते है। जंगल से जीविकापार्जन का साधन जुटानेवाले आदिवासियों का रोजगार बंध हो जाता है। साथ ही खेतखलिहान का जमीन भी सड़क - बनाने के काममें सरकार कब्जा कर लेते है। खेतीबारी कर रोजीरोटी कमानेवाला साधन भी आदिवासियों के पास नहीं रहता- । अब ले के काम में मजदूरी करना ही विकल्प रह जाता है देकर आदिवासियों के पास सड़क बनाने-। इस कार्य में भी उन पर शोषण किया जाता है। मशीनी गति से काम निकलवाना और मजदूरी में रुपया कम देना तो स्वाभाविक हो गया है। अपना पेट पालने के लिए आदिवासी मजदूरी कर जीवन यापन करते है-।

सरकारी योजनाएँ तो ज्यादेतर"कागजों में ही सिमट कर रह जाती हैं। दिखावे के खर्च होते रहेंगे। इन आदिवासियों का भाग्य वहीं का वहीं रह जायेगा। बेहिसाब खदान कोलियरी खुलेगी ,। नदियों में पुल बनेंगे बाँध बनेंगे ,। बिजली तैयार होगी नहरें खुलेंगी ,। वर्षों की मेहनत से बनी बनायी जमीन डूब जायेगी-। मुआवजे के नाम दिखावे की रकम मिलेगी। घरबार - छोड़ना होगा। घर के आदमी विस्थापित कर दिये जायेंगे। दूर के इलाके से आये लोगों का राज्य चलेगा। स्थानीय आदिवासी चाय बगानों"भट्टों की राह लेंगे-ईंट , 3 सरकार आदिवासियों को जमीन के बदले जो मुआवजा देते है वह बहुत ही नगण्य है ,। वह पैसा कब कैसे और कहाँ खर्च हो जाता है आदिवासियों को पता भी नहीं चलता ,। अचानक से आदिवासियों का जीवन मालिक से गुलाम की जिन्दगी में परिवर्तित हो जाता है। दरअसल सरकार आदिवासियों से जमीन छीनकर एक तरह से ताउम्र पंगु बना देते है। सरकार ने आदिवासियों से जमीन लेकर उनकी दुनिया ही उजाड़कर रख देता है। अधिकत्तर योजनाओं में

साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

जमीन दे देने के बाद मिलनेवाली मुआवजा भी आदिवासियों को नसीब नहीं होता। सरकारी कागजात में लिखा होता है कि आदिवासियों को अपना जमीन देने के बदले मुआवजा मिल चुका हैधरातल में आकर देखा जाए तो जमीन के लेकिन असली , कोड़ी भी नहीं मिलती-बदले एक फूटी। उपन्यासकार ने सरकारी कार्यकलाप में चल रहे धोकाधरी और भ्रष्टाचार , आदिवासियों के साथ हो रहे अन्याय पर पाठकों का ध्यान केन्द्रीत किया है। इस प्रकार सरकारी योजनाएं आदिवासी गाँव को तहस देता है नहस कर-। बेघर होकर आदिवासी भटकाव की जिन्दगी गुजारते है।

सरकार के झुटी आश्वासन पर विश्वास कर गाववासी ठगा हुआ महसूस करते है। दरअसल इस योजना को पुरी करने के लिए आदिवासियों को अपना जमीन दे देना परता है। प्रकृति पूजक आदिवासियों का जमीन से जुड़ा हुआ रिश्ता टूट जाता है। जिस जमीन के जरिए आदिवासी अपने पूर्वजों से भावनात्मक स्तर से जुड़े हुए सम्बन्ध भी लुप्तप्राय होने लगती है। इस सन्दर्भ में सवाल सिर्फ जमीन का नहीं है" कहते है कि 'प्रमोद मीणा'। इस जमीन के साथ आदिवासी समाज की अर्थव्यवस्था-समाज , "सांस्कृतिक मान्यताएँ और पूर्वजों की यादें जुड़ी हैं-धार्मिक ,व्यवस्था 4 जमीन से जुड़े रहने का मतलब होता है कि अपने जड़ से जुड़े रहना से ही काट फेंकता है (जमीन) परन्तु सरकारी योजनाएं आदिवासियों के जड़ ,। आदिवासी एक जगह से दूसरें जगह में विस्थापित होते ही अपनी जो परम्परागत विशेषताएँ धुमील पर जाती है। अपना सांस्कृतिक उत्सवों को पालन करने के लिए पहले जैसा परिवेश और संगी साथी का भी अभाव महसूस करता है-। विस्थापित हुए आदिवासी अपने परिवार-नाते , रिश्तों और अपना आदिवासी समाज से बिछड़ जाते है। विस्थापित हुए आदिवासी कभीकभी अपना आदिवासी धर्म को भी - भूल जाते है और अन्य धर्म में परिवर्तित हो जाते है। सरकारी योजनाएं आदिवासियों को सम्पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इन योजनाओं का नकरात्मक प्रभाव का शिकार आदिवासी समुदाय ही होते हुए देखा जाता है।उपन्यास में 'पलास के फुल' किया गया है स्पष्ट रूप में चित्रित।

विस्थापन के कारण जन्मे अन्य समस्याओं पर भी दृष्टि डाली गयी है। उनमें से प्रमुख है बेरोजगारी की समस्या। इस समस्या के सन्दर्भ में विस्थापन के साथ ही आदिवासियों के जीविकोपार्जन की समस्या शुरू " कहते है कि 'आनंद कुमार पटेल' जिससे आदिवासी समाज स्थाई रूप में न रहकर घुमंतू जीवन जीने के ल ,हो जाती हैिए मजबूर हो जाता है। एक्का के उपन्यास "पीड़ा की आक्रोशपूर्ण अभिव्यक्ति हैं-दुःख ,आदिवासी समाज की समस्या ,5 आदिवासियों के रोजगार का प्रमुख साधन खेत और जंगल होता है। आदिवासी बहुत परिश्रम कर फसल उगाते है और उसी से अपना जीविका चलाते है। साथ ही जंगल से फल लकड़ी इत्यादि बटोरकर बजार में बेचकर आदिवासी अपना जीविका चलाते है ,जड़ीबुटी ,सब्जी ,मूल-। यह दोनों ही साधन सरकार ने बंध करवा दिया। बेरोजगारी की समस्या के साथसाथ आदिवासियों का जीवन आर्थिक तंगी ने ओर भी - अधिक दयनीय बना दिया। आर्थिक कमजोरी ने आदिवासियों को हाथ फैलाने के लिए मजबूर कर दिया। मजबूरी में आकर आदिवासी ऋण ग्रस्त जीवन जीवन जीता है। ऋण से दबकर रहनेवाले आदिवासियों का शोषण जमींदार किया करते है। कर्ज चुकाने के लिए आदिवासियों के पास बचा हुआ सबकुछ जमींदार को सौंप देते है। असल में ऋण के नाम पर आदिवासियों को ठगा जाता है। आदिवासियों का जीवन बहुत कठिनाई और त्रासदी से गुजरती है।

साहित्यिक पत्रिका अंक – 1, खंड-1 , सम्पादक- डॉ. अंजु लता

विस्थापन के कारण आदिवासियों के जमीन पर वर्षों से चले आ रहे आदिवासियों की सामाजिक ,आर्थिक ,धार्मिक ,सांस्कृतिक , राजनीतिक और शैक्षिक गतिविधियाँ बिछीन्न हो जाती है। जमीन से हाथ धोते ही आदिवासियों के जीवनप्रणाली का साधन - नहीं रहा। अपना प्राणस्वरूप जल जंगल और जमीन पर आदिवासियों का अधिकार सरकार ने छीन लिया ,। अब मजदूरी करने के अलावा कोई रोजगार का साधन नहीं बचा । इसलिए सलोमी कहती है कि कल कहीं और होंगे ,आज हम यहाँ हैं"। जंगल के जंगलघा-पहाड़ ,टियाँ जाने कहाँ कहाँ भटकना होता है-। सब तो भटकते ही जा रहे हैं । यहाँ से हजारों मील दूर चाय के बगानों निचोड़े जायेंगे ,भट्टों का स्वप्न कौन देखता है वहाँ भी दबाये जायेंगे-ईंट ,। पर शायद दो जून की रोटी जुट जायेगींन । यही हमारा धर्म हो गया है "भाग्य बन गया है ,6 भूख की आग को मिटाने के लिए आदिवासियों को इधरउधर भटकते हुए - जीवन व्यतीत करना परता है। अपने गाँव में रोजगार का साधन न मिलने के कारण दूसरें गाँव में रोजगार की तलाश में जाते है । फिर कुछ दिन वहां मजदूरी का काम कर पेट भर लेते है । दूसरी जगह पर भी जब बेरोजगारी का अकाल परता है तो तीसरी जगह विस्थापित हो जाते है । आदिवासियों का जीवन अंतहीन भटकाव का दौर निरंतर चलते रहते है । आदिवासी चाहे जहां पर चला जाए हर जगह उन पर शोषण प्रताड़ित और अजनबी का जीवन जीना परता है-। यह निरंतर चलते संघर्षमय जीवन से थक हार कर अपने भाग्य पर ही दोष देकर मौन में जीवन जीते है । उपन्यास के अंत में देखते है कि सरकारी योजना के तहत सड़क पूल बनकर तैयार हो चूका है-। उसी सड़क और पूल से आदिवासी बेरोजगारी के अकाल से बचने के लिए विस्थापन का रास्ता ही चुन लेते है । आदिवासी बनाम विस्थापन की त्रासदी को उपन्यासकार ने बहुत ही यथार्थ रूप में रेखांकित किया है ।

उपन्यास में स्पष्ट रूप में आदिवासियों पर चल रहे घिनौने षड़यंत्र का पर्दाफाश किया गया है । उपन्यासकार ने कटाक्ष रूप मेंआदिवासियों के जीवन को अँधेरे के तरफ धकेल देने में राज ,नीतिक शासन पर बैठे सरकार को जिम्मेदार ठहराया है । इंजीनियर साहब आदिवासियों की दुर्दशा देख सोचता है कि भाले आदिवासियों के भले के लिए हो रहा-यह सब क्या उन भोले" "है है या एक अंतहीन भटकाव की शुरुआत7 आदिवासियों का सरकार से जो उम्मीदें थीवह सब कुछ खतम हो गया ,। आदिवासी पर शारीरिक मानसिक और आर्थिक शोषण बढ़ता ही जा रहा है ,। सरकार ने आदिवासियों से अपना जलजंगल , और जमीन से अधिकार छींन लिया। इसके साथ ही आदिवासी समाजपहचान भी गायब अस्मिता और अस्तित्व की ,संस्कृति , होने के कगार पर पहुँच चुका है। सरकार अगर आवश्यकता अनुसार विकास और आदिवासी जीवन के बीच संतुलन स्थापित कर पाते तो मूल निवासियों का जीवन तबाह होने से बच सकता है । सरकार प्रयोजनीयता के हिसाव से ही विकास करने का कार्य अपना लेते तो सब का साथ सब का विकास संभव हो पाएगा ।

निष्कर्ष -

पलास के फ' ूलउपन्यास आद 'िवासी समाज के विस्थापन की त्रासदी को बहुत ही विस्तृत एवं प्रभावी ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल मान सकते है । असल में सरकारी योजनाएं आदिवासियों के जमीन पर ही पूर्णता प्राप्त करती है । गाँव में उपलब्ध होनेवाले सुविधाओं का लाभ आदिवासी नहीं उठा पाते । विकास का श्री गणेश तो गाँव में बढ़ियाँ से किया जाता है की समस्या बढ़ने लगती है 'विस्थापन' लेकिन ,। जमीन से बेदखल होते ही अधिकत्तर आदिवासी विस्थापित हो जाते

है। गाँव में रह गये आदिवासी सरकारी योजना में मजदूरी का काम कर अपना परिवार का पालनपोषण कर लेते- है। जब आदिवासी गाँव में सरकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक काम हो जाता है तो तब गाँव में फिर से बेरोजगारी का अकाल परता है। गाँव में बाकी बचे मजदुर आदिवासी दूसरी जगह काम के तलाश में विस्थापित हो जाते है। अंत में गाँव पूरा का पूरा खाली परा रहता है। गाववालों की यातायात के सुविधा के लिए बनाये गये सड़क पुल बाहर से आये लोगों के लिए काम आते है-। सरकारी कागजत में आदिवासियों के भलाई के लिए बनाया गया सड़कलेकिन असल में यथार्थ ,पुल नाम से दर्ज किया रहेगा- धरातल पर आकर देखा जाए तो सुविधा का भोग उठाते अन्य लोगों की जमघट के दिखाई देंगी। सरकारी योजनाओं का खोखले और दिखावा के कार्य का खुलासा उपन्यासकार अपने उपन्यास के माध्यम से करते है।उपन्यास अपनी 'पलास के फुल' इस मौलिकता के कारण पाठकों में खूब चर्चित है। आदिवासी अपना जमीन और परिश्रम देकर के सड़कपरन्तु ,पूल बनाएगा- इसके बाद उपभोग न कर पाने की विडम्बना भी बहुत दुखद है। विस्थापन की समस्या पर केन्द्रित यह पीटर पॉल एक्का की उपन्यास बहुत ही प्रासंगिक साबित होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1.डॉरमे .श चंद मीणा ,जयपुर ,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रकाशन ,विमर्श आदिवासी ,2013, पृष्ठ संख्या 42

2.गंगा सहाय मीणा ,नयी दिल्ली ,अनन्य प्रकाशन ,आदिवासी चिंतन की भूमिका ,2019, पृष्ठ संख्या 26

3.पीटर पॉल एक्का ,रांची ,सत्य भारती प्रकाशन ,पलास के फूल उपन्यास ,2012, पृष्ठ संख्या 58

4.अनुज लुगुन ,दिल्ली ,अनन्य प्रकाशन ,आदिवासी अस्मिता प्रभुत्व और प्रतिरोध ,2018, पृष्ठ संख्या 51

5.आनंद कुमार पटेल ,रांची ,सत्य भारती प्रकाशन ,आदिवासी संवेदना और पीटर पॉल एक्का के उपन्यास ,2020, पृष्ठ संख्या 117

6. पीटर पॉल एक्कापलास , के फूल उपन्यास ,रांची ,भारती प्रकाशन सत्य ,2012, पृष्ठ संख्या 58

7.पीटर पॉल एक्का ,रांची ,सत्य भारती प्रकाशन ,पलास के फूल उपन्यास ,2012, पृष्ठ संख्या 20